AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

व्यक्तित्व विकास हेतु स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. नियाज अहमद अन्सारी
सहा. आचार्य, राजनीति शास्त्र एवं व्यक्तित्व विकास
शासकीय आदर्श महाविद्यालय
उमरिया, मध्यप्रदेश, भारत

राखी गुप्ता
शोधार्थी
राजनीति शास्त्र विभाग
देवी अहिल्या विश्विद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

समकालीन भौतिक विकास, उदारीकरण और भूमंडलीकरण ने मानव को जहां एक तरफ आरामपरस्त और विलासी बनाया है तो दूसरी तरफ स्वार्थी एवं अर्थमुखी भी बनाकर जनकल्याण के मार्ग से भटका दिया है। अब भारतीय युवाओं को सच्चे राष्ट्रसेवकों की भूमिका निभानी होगी, तभी हम अपनी ज्ञान एवं प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण कर उसका सतत् दोहन कर पाएंगे। इस चकाचौंध एवं परिवर्तन के दौर में कई सामाजिक विकृतियों और बुराईयां भी लगातार सामने रही हैं। इसके दुष्प्रभावों से बचने हेतु अब हमें स्वामी विवेकानंद के कार्यों एवं विचारों की सहायता लेना परमावश्यक हो गया है।

मुख्य शब्द

स्वामी विवेकानंद, व्यक्तित्व विकास, अर्थमुखी.

अब मात्र कक्षा में बैठना, पुस्तकों का कोरा अध्ययन, व्याख्यान सुनने और परीक्षा के प्रश्नों के उत्तर लिख देने भर से कुछ नहीं होगा। भारत में वास्तविक शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु बालकों और युवाओं में आध्यात्मिक शक्ति एवं सृजनात्मक क्षमताओं का सतत् विकास करके ही उन्हें राष्ट्र निर्माता बनाया जा सकता है। वस्तुतः 21 वीं सदी में विवेकानंद जी के निम्नलिखित महत्वपूर्ण विचारों को व्यक्तित्व विकास हेतु अपनाने की नितान्त आवश्यकता बनी हुई है। उनके महत्वपूर्ण प्रासंगिक विचार निम्नलिखित हैं:

1. महिला सशक्तिकरण संबंधी विचार

विवेकानंद जी का मानना है कि समाज का विकास पुरूष और महिलओं के संयुक्त प्रयासों से ही सम्भव है जैसे पक्षी को उड़ान भरने के लिए दो पंखों की आवश्यकता होती है। महिलाएं मानव जीवन की आधार स्तम्भ हैं इनके बिना परिवार, समाज, व्यवसाय, धर्म और सम्पूर्ण प्रकृति की कल्पना नहीं की जा सकती।[1] महिलाएं ही पुरूष के जीवन में माता, पुत्री, बहन, पत्नी, बहू, मित्र और सहकर्मी आदि विभिन्न रूपों में अपनी बहुमुखी एवं चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं का आजीवन निर्वहन करती रहती है।

2. स्वंत्रता विषयक विचार

विवेकानंद जी स्वतंत्रता को मानवीय जीवन की अमूल्य निधि मानते हैं। उनका मानना है कि सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड अपनी अनवृत गति से स्वतंत्रता की ही खोज कर रहा है। उन्होंने स्पष्ट कहा है शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर स्वयं अग्रसर होना और दूसरों को भी उसकी ओर अग्रसर करने में सहायता देना मनुष्य का पुनीत

कर्त्तव्य है। जो दुष्ट व्यक्ति इस कार्य में बाधा डालते हैं उन्हें नष्ट करने हेतु सज्जनों को लगातार प्रयत्न प्रारम्भ कर देना चाहिए। ऋगवेद की एक महत्वपूर्ण ऋचा में कहा गया है[2]:

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।

अर्थात् "तुम सब लोक एक मन हो जाओ, सब लोग एक ही विचार धारण करो क्योंकि प्राचीन काल में एक मन होने के कारण ही देवताओं ने आहूति पायी है।

3. व्यवसायिक ईमानदारी की पुर्नस्थापना

अंग्रेजी शासन के भ्रष्टाचार और अराजकता का दुष्प्रभाव भारत की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर पड़ने से व्यवसायिक ईमानदारी लगातार घटती गई है। इसके दुष्परिणामस्वरूप मिलावटखोरी और जमाखोरी की दुष्प्रवृत्ति ने भारत के बाजारों में मजबूत पकड़ बना ली है। अतः वर्तमान भारत में व्यवसायिक ईमानदारी की पुर्नस्थापना करना नितान्त आवश्यक हो गया है। एक ओर व्यापारी अपने लेन–देन का उचित संधारण नहीं करते हैं और दूसरी ओर व्यापार में मित्रता को लाकर घाटे में चले जाते हैं। साझेदारी वाले व्यापार में भी एक–दूसरे को धोखा देकर अनुचित लाभ उठाने से भी व्यापार नष्ट होता है। अतः हमें शुध्द व्यवसायिक एवं नैतिक दृष्टिकोण अपनाकर समयानुकूल बाजार व्यवस्था स्थापित करनी होगी जिसमें व्यापारियों द्वारा किसी विशेष वस्तु का मनमाना मूल्य निर्धारित न किया जा सके इसके साथ ही सक्षम व्यापारियों से पर्याप्त कर वसूला जाना चाहिए। महात्मा गांधी ने भी विवेकानंद जी के इस विचार का प्रबल समर्थन किया है।[3]

4. समयानुकूल शिक्षा व्यवस्था

भारत में आजादी मिलने के बाद हमारे राजनेताओं ने शिक्षा प्रणाली को सुधारने में गम्भीरता पूर्वक विचार नहीं किया है। लगातार पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षा पर व्यय उत्तरोत्तर घटता गया है। आजादी प्राप्ति के 75 वर्ष बाद भी योग्य शिक्षा मंत्री भारत को नहीं मिल पाया। अतः अतियोग्य, ईमानदार और कर्मठ शिक्षक को ही ऐसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी जानी चाहिए। विवेकानंद जी ने कई अवसरों पर स्पष्ट कहा है "हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों को अपने शिक्षकों से लगातार संवाद स्थापित कर अपनी समस्त ऊर्जा, विद्या, अनुभव और कर्मठता का सदुपयोग करने हेतु पुनः संगठित होकर रहना सीखना चाहिए।"[4]

5. संगठन की महत्ता का प्रतिपादन

विवेकानंद जी का मानना था कि युवाओं को अपनी छोटी–छोटी बातों पर लड़ाई–झगड़ा और आपसी मनमुटाव से बचकर राष्ट्र निर्माण में अपना यथोचित योगदान देने हेतु कमर कस लेना चाहिए। जब तक हम देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करते हुए संबंधित समस्याओं के समाधान खोजने में सफल नहीं होते, तब तक विश्वगुरू नहीं बन सकते। आज के युवाओं का परम् कर्तव्य होना चाहिए कि वे अपनी बिखरी हुई शक्तियों को एकत्र कर राष्ट्र निर्माण में लगाते रहें।[5]

6. आत्मनिर्भरता का समर्थन

विवेकानंद जी ने युवाओं को स्वालम्बन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि युवाओं के कंधों पर ही देश का भविष्य और उनकी जीवन की सार्थकता निर्भर होती है। अतः भारत के युवाओं को छोटे–बड़े सभी कामों में आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए। तुलसीदास जी ने कहा है कि हम दूसरों के पराधीन रहकर सपनों का भी सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकते– पराधीन सपने सुख नाहिं।

यदि हम स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकते हैं तो हमें मानव के रूप में जीवित रहने का अधिकार भी नहीं है। युवाओं को सचेत करते हुए विवेकानंद जी कहते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र को अपनी सुरक्षा स्वयं करनी होती है और तुम्हें भी अपनी स्वयं और परिवार की रक्षा करने हेतु कमर कसनी होगी। उन्होंने युवाओं से आलस्य, स्वार्थपरकता और निकम्मापन जैसी बुराईयों से सदैव दूर रखना चाहिए।[6]

7. उच्चतम आदर्शों की पुर्नस्थापना

विवेकानंद जी के अनुसार हर मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करे। वह कहते हैं कि हमारा मानवीय कर्तव्य इसलिए है कि हम स्वयं उच्चतम आदर्श जीवन जीने का प्रयास करें और अपने आस–पास के लोगों को भी आत्मसंघर्ष हेतु प्रोत्साहित करें। ऐसा करते रहने से ही हम जीवन का सच्चा आनंद और ईश्कृपा पाएंगे। वेदांत धर्म का उदात्त तथ्य ही ये है कि हम एक ही लक्ष्य पर भिन्न मार्गों से पहुंच सकते हैं, जैसे– नदियों को पानी विभिन्न छोटे–बड़े और सकरे–चौड़े मार्गों से प्रवाहित होकर समुद्र में जा मिलता है। विवेकानंद जी ने इन मार्गों को 4 वर्गों में विभाजित किया हैः

1. **कर्ममार्गः** अपने जीवन की सार्थकता को बनाए रखने हेतु सद्कर्मों में लगाए रखना।
2. **भक्तिमार्गः** मानसिक शांति और आध्यात्मिक शक्ति हेतु पूर्णतः ईश्वर पर आश्रित रहना।
3. **योगमार्गः** शारीरिक स्वास्थ्य एवं आत्मानुशासन बनाए रखने हेतु नियमित योग तथा व्यायाम करना।
4. **ज्ञानमार्गः** प्राप्त तन–मन–धन–यश और ज्ञान को लोक कल्याण में लगाते रहना।

निष्कर्ष

21 वीं सदी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति से रोबोट, क्रेन, जेसीबी, कम्प्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मानव की कार्यक्षमता अवश्य बढ़ी है, किन्तु इसी अनुपात में हमारे चारित्रिक मूल्यों, कर्त्तव्यनिष्ठा, संवेदना, करूणा और परोपकार की भावना कम होती गई है। इसके दुष्परिणामस्वरूप न केवल भारत, बल्कि विश्वभर में भ्रष्टाचार, कामचोरी, अत्याचार, शोषण एवं अश्लीलता से मानव का सामाजिक ताना–बाना विकृत हुआ है। अब इसे पुर्नगठित करने हेतु हमें संकल्पबद्ध हो जाना चाहिए ।

अतः 21 वी सदी की इन बुराईयों को दूर करने हेतु विवेकानंद जी के उपरोक्त विचार हमारे मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्त्रोत बनने में पूर्णतः सक्षम है। हमें अविलम्ब, मानवीय समाज के सभी धर्मों एवं वर्गों को इस पर अमल कराकर मानव कल्याण का लक्ष्य निर्धारित कर युवाओं को आत्मविश्वास से परिपूर्ण होकर लोककल्याणकारी कार्य करने होगें। स्वामी विवेकानंद जी का यह कथन अत्यंत प्रासांगिक, प्रेरक एवं अनुकरणीय है, ''जब तक आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर भी विश्वास नहीं कर सकते।''

संदर्भ सूची

1. प्रतियोगिता दर्पण, (सितंबर 2002) उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ. 382
2. नंदलाल, राजनीति विज्ञान, (2018) शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, इन्दौर, पृ. 148।
3. विवेकानंद, स्वामी (2003) *भारत और उसकी समस्याएं,* रामकृष्ण मठ, (प्रकाशन विभाग) नागपूर, पृ. 24
4. चौधरी, उमराव सिंह (2011) *सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा,* म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 12।
5. शुक्ल, चंद्रकांत; एवं सिंह, अवनीश (2020) *भारतीय बौद्धिक एवं सांस्कृतिक चिंतन धारा,* सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 31।
6. स्वामी विवेकानंद साहित्य संचयन (2000, एकादश संस्करण) रामकृष्ण मठ, नागपूर, पृ. 18।

––==00==––